पिछली कक्षा की सीख से नई कक्षा की तैयारी

शोभन सिंह नेगी

नई कक्षाओं में प्रवेश से पहले बच्चों को दुबारा से पिछली कक्षाओं के अनुभव मिलना महत्त्वपूर्ण है। इस तरह के अनुभव नई कक्षा की नींव को पक्का करते हैं। ग्रीष्मावकाश ऐसा अवसर होता है जब बच्चों की नई कक्षा की चुनौतियों को समझते हुए ख़ुशनुमा माहौल में सीखने-सिखाने के रोचक व रचनात्मक तरीक़े अपनाए जाएँ।

बच्चों के जीवन में नई, या कहें अगली कक्षा में प्रवेश करना एक महत्त्वपूर्ण घटना होती है। यह अनुभव की बात है कि अधिकांश बच्चे पास होकर अगली कक्षा में पहुँच तो जाते हैं, लेकिन पिछली कक्षा की उनकी चुनौतियाँ बनी रहती हैं। अकसर देखा गया है कि सरकारी विद्यालयों में बच्चों को नई किताबें जुलाई में ही उपलब्ध हो पाती हैं। इसलिए अप्रैल-मई और ग्रीष्मावकाश एक ऐसा मौक़ा होता है जब शिक्षक बच्चों को ऐसे अनुभव दे सकते हैं जिन्हें देने से वह कई कारणों से वंचित रह जाते हैं। इस लेख में, ऐसे ही अनुभवों व अवलोकनों का उल्लेख है।

ग्रीष्मावकाश : सीखने-सिखाने के अनुभव

सत्र के शुरुआती महीनों, यानी अप्रैल-मई में यहाँ पिछली कक्षाओं की पढ़ाई को दोहराने पर समय लगाना अच्छा होता है। दोहराने, यानी रिवीज़न का ठोस आधार शिक्षकों के पास होता ही है, क्योंकि बच्चों की वार्षिक परीक्षाएँ उन्होंने ही ली होती हैं। सभी शिक्षकों को प्रत्येक बच्चे के शैक्षिक स्तर की ठोस जानकारी होती है। उन्हें मालूम होता है कि किस कक्षा का कौन-सा बच्चा किस स्तर पर है। बेहतर होता है जब शिक्षक बच्चों की दक्षता स्तर के आधार पर उनके समूह बनाते हैं। फिर बच्चों के शैक्षिक स्तर के हिसाब से शिक्षण योजना बनाई जाती है।

चित्र 1: समर कैम्प में प्रतिभाग करते विद्यार्थी

अवलोकनों में मैंने पाया कि चित्र अथवा चित्र कहानियों पर बातचीत करना बच्चों के साथ अच्छी व सहज शुरुआत हो सकती है। बच्चों की अभिव्यक्ति, कल्पनाशीलता और मौखिक भाषा विकास के लिए यह गतिविधि प्रभावशाली लगी। कक्षा 5 तक के बच्चों के लिखित व मौखिक भाषा विकास में चित्र व चित्र कहानियाँ असरदार माध्यम होती हैं। मैंने अनेक शिक्षकों को चित्र कहानियों पर बच्चों से संवाद करते देखा और बच्चों को चित्रों पर कहानियाँ बनाते व कल्पना करते सुना। साथ ही, उन्हें चित्रों पर रची गई कहानियों को प्राथमिक कक्षाओं में सुनाते हुए देखा।

छोटी कक्षाओं के बच्चों में भाषा के मौखिक विकास में यह रोचक व कमाल की गतिविधि है। इकतारा, एकलव्य, रूम टू रीड, नेशनल बुक ट्रस्ट, आदि संस्थाओं द्वारा चित्र कहानियों सहित ऐसा ढेर सारा अच्छा साहित्य प्रकाशित किया जा रहा है। इन सभी संस्थाओं ने बच्चों के लिए कई अच्छी चित्र कहानियाँ भी प्रकाशित की हैं। कुल मिलाकर, इस दौरान बच्चों के मन और उनकी भाषाई पृष्ठभूमि को समझने, उनमें पढ़ने की रुचि पैदा करने और कल्पनाओं को पंख देने का काम किया जा सकता है।

एक और बात जो मुझे समझ आई कि अभी कक्षा 8 तक के बच्चे भी बुनियादी भाषा व संख्या-ज्ञान सीखने की समस्या से जूझ रहे हैं। कोविड काल ने इसे और बढ़ाया है। ऐसे में, बच्चों में बुनियादी भाषा व गणित के कौशलों के विकास के लिए प्रयासों को आगे बढ़ाना ज़रूरी है। हम यह भी जानते हैं कि अधिकांश बच्चे पिछली कक्षा के स्तर पर आ जाएँ, इसके लिए लाइब्रेरी का इस्तेमाल बेहतर ढंग से किया जा सकता है। बच्चों को उनके स्तरानुसार किताबें पढ़ने के अवसर देना काफ़ी फ़ायदेमन्द होता है। प्रत्येक बच्चे के लिए रोज़ाना उनके स्तर के हिसाब से पठन सामग्री से चयन हो और पढ़ी हुई सामग्री पर उनसे बातचीत हो। ख़ासतौर पर यह जानना कि बच्चों की कहानी के पात्रों और कहानी में पात्रों के आपसी सम्बन्धों के बारे में समझ क्या है। इस तरह की बातचीत से बच्चों में पढ़ने की रुचि और आदत का विकास भी होता है।

महत्त्वपूर्ण बात यह है कि बच्चों को पठन सामग्री देना ही पर्याप्त नहीं है। शिक्षकों को भी बाल साहित्य पढ़ना ज़रूरी है। यहाँ एक घटना का ज़िक्र प्रासंगिक होगा। कुछ साल पहले फ़ाउण्डेशन की बाड़मेर टीम ने निर्णय लिया कि पुस्तकालय आन्दोलन के जनक स्व पी एन पणिक्कर की पुण्यतिथि 20 जून 'राष्ट्रीय पठन दिवस' पर पठन को लेकर कुछ स्कूलों के साथ व्यापक स्तर पर काम करना चाहिए। एक प्राथमिक पाठशाला में फ़ाउण्डेशन के तीन साथी व स्कूल के चार शिक्षक शामिल थे। बच्चों की संख्या तक़रीबन 70 होगी। हम बच्चों की आयु, कक्षा व रुचि के अनुसार किताबें लेकर स्कूल गए थे। बच्चों ने अपने-अपने समूहों में उस दिन 2 घण्टे में तीन-चार कहानियाँ पढ़ीं। हमने पाया कि बच्चों ने सबसे अधिक जंगल व जानवरों से जुड़ी हुई कहानियाँ पसन्द कीं। जब बच्चों से सवाल पूछा गया कि कहानी के पात्र कौवे और कछुए की जगह आप होते तो क्या करते। बच्चों के जवाब बेहद रोचक व मौलिक थे। इस सवाल ने बच्चों के अलावा शिक्षकों में भी काफ़ी उत्साह पैदा किया था। यहाँ रेखांकित करने वाली बात है कि एक शिक्षक साथी ऐसे थे जो अलग-अलग कक्षाओं में घूम तो रहे थे, लेकिन उनकी पढ़ने में बिल्कुल रुचि नहीं थी। हम भी उनमें रुचि पैदा करने में असफल रहे। हालाँकि जब वह एक समूह में खड़े होकर बच्चों के जवाब ध्यान से सुनने लगे तब हमें बहुत अच्छा लगा। एक बच्चे ने उनसे सवाल भी पूछा, "सर, अगर इस कहानी में कछुए की जगह आप होते तो क्या करते?" उन्होंने कहा, "मैंने तो कहानी पढ़ी ही नहीं।" यहाँ उनके चेहरे के हाव-भाव बदले हुए दिखे। उन्हें इस बात का एहसास हुआ कि जब बच्चे शिक्षक को कहानी पढ़ते हुए देखते हैं तब उनका उत्साह दुगना हो जाता है। जहाँ भी मैंने बच्चों को कहानियाँ पढ़ते हुए देखा या सुना, वहाँ एक बात सामान्य थी कि जिस स्कूल में शिक्षक बच्चों के साथ कहानियाँ पढ़ते हैं, वहाँ पढ़ने-लिखने का माहौल बनता है।

ख़ासतौर पर, अप्रैल-मई में एक स्कूल में शिक्षकों का पढ़ाई को दोहराने, यानी रिवीज़न का तरीक़ा बेहद कमाल का दिखा। वह प्रत्येक बच्चे से सवाल पूछ रहे थे कि उनको पिछली हिन्दी की पाठ्यपुस्तक का सबसे पसन्द का पाठ और सबसे कठिन पाठ कौन-सा लगा। शिक्षक सभी बच्चों को सोचने के लिए पर्याप्त समय दे रहे थे।

किसी एक सप्ताह के दौरान वह बच्चों के साथ इस तरह के कक्षा कार्य कर रहे थे–

प्रत्येक बच्चा सरल पाठ व कठिन पाठ के बारे में सोचे और बच्चों को समूह में बताए। दूसरा कक्षा कार्य था कि उसी बात को

चित्र 2 : समर कैम्प में चित्रकारी करती एक विद्यार्थी

लिखकर साझा करे। यह काम हर बच्चा बारी-बारी से कर रहा था। यह उनकी कुछ दिनों की शिक्षण योजना थी। यह योजना सिर्फ़ भाषा तक सीमित नहीं थी, बल्कि गणित व पर्यावरण अध्ययन पर भी लागू थी। इतना ही नहीं, वह पिछली कक्षा से जुड़ा एक अच्छा और एक बुरा अनुभव भी सुनाने को कह रहे थे। कुछ समय बाद उस स्कूल में जब दुबारा गया, मैंने देखा कि शिक्षक ने बच्चों के इन अनुभवों को दीवार पत्रिका पर चस्पा भी किया था। थी तो यह साधारण गतिविधि, लेकिन बच्चों को पीछे की कक्षा का पुनराभ्यास कराने का यह प्रभावी तरीक़ा था। इस गतिविधि में–

1. प्रत्येक बच्चे ने पिछली कक्षा की पुनरावृत्ति की।
2. कोई पाठ सरल या कठिन क्यों लगा, इस बारे में बच्चों ने सहजता से बताया।
3. हर बच्चे को प्रोत्साहन मिला, और बड़े समूह में बोलने का मौक़ा दिया गया।

> **यहाँ बच्चों के साथ शिक्षक भी कुछ सीखते मिलते हैं। शिक्षक भी बच्चों को ऐसे अनुभव देना चाहते हैं जो वह स्कूल में या कक्षा में नहीं दे पाते हैं।**

4. बच्चों को पाठ सरल या कठिन क्यों लगा, के बारे में लिखने के मौक़े दिए गए।
5. कठिन अवधारणाओं पर शिक्षक ने भी अपनी समझ और काम करने की योजना बनाई।
6. इतना ही नहीं, बच्चों के द्वारा बताए गए अनुभव, कि क्या बुरा लगा और क्या अच्छा, सही अर्थ में विद्यालय के लिए भी एक फ़ीडबैक था।

पिछली कक्षा से नई कक्षा के बीच सेतु बनाने की यह पद्धति कमाल की थी। इस प्रक्रिया ने नई कक्षा की चुनौतियों को बहुत सहज बना दिया, क्योंकि शिक्षक उन क्षेत्रों और अवधारणाओं पर बच्चों के साथ काम कर रहे थे जिनमें बच्चों को कठिनाई महसूस हो रही थी।

समर कैम्प : सीखने–सिखाने के अनुभव

मैंने पिछले दस साल में राजस्थान व उत्तराखण्ड में ग्रीष्मकालीन छुट्टियों में जितने भी कैम्प देखे, उनमें जो बात एक जैसी दिखी वह थी– बच्चों में अपार ख़ुशी, जोश और उत्साह का भाव। यहाँ बच्चे बोर नहीं होते। बच्चे जो कुछ सीखते हैं, मन से सीखते हुए मिलते हैं। शिक्षक भी तनावमुक्त दिखते हैं। शिक्षकों के मन में बच्चों के लिए कुछ नया, रचनाशील करने की इच्छा को मुखर रूप से देखा जा सकता है। समर कैम्प में अभिभावकों

चित्र 3 : समर कैम्प में खेल गतिविधि में प्रतिभाग करते विद्यार्थी

व प्रतिनिधियों की उत्साहजनक भागीदारी दिखाई देती है। इसमें अधिकारियों की सकारात्मक प्रतिक्रिया से शिक्षकों को प्रबल समर्थन मिलता है। कमाल की बात यह है कि स्कूल व गाँव के पढ़े-लिखे युवा भी इस समर कैम्प में अपनी कलाओं व कौशलों को बच्चों के साथ साझा करते दिखाई देते हैं। समर कैम्प का वातावरण रंग-बिरंगा व उत्सव जैसा दिखता है। ऐसा प्रतीत होता है कि बच्चे बहुत कुछ सीखना चाहते हैं। वह सीखने में इतने आनन्दित होते हैं कि परिसर से घर जाना ही नहीं चाहते। शिक्षकों को ही उन्हें कहना पड़ता है, "बच्चो, अब घर जाओ!" जिस दिन कैम्प का समापन होता है, बच्चे बताते हुए नहीं थकते कि उन्होंने क्या-क्या सीखा।

मन में सवाल आता है कि आख़िर ऐसा क्या है इन समर कैम्प में! मैंने कुछ ऐसी अच्छी चीज़ें देखीं जो सभी कैम्पों में समान थीं।

यहाँ बच्चों और शिक्षकों दोनों में उत्साह और ख़ुशी दिखती है जो आम दिनों में स्कूल में कम ही दिखाई देती है। इसके पीछे इन समर कैम्प की डिज़ाइन का कमाल है। कोर्स की चिन्ता से मुक्त होकर शिक्षक जो कुछ मन से करना चाहते हैं, यहाँ करने की आज़ादी है। सिर्फ़ पढ़ने-लिखने व अनेक जीवन कौशलों पर भी ध्यान रहता है। गतिविधियों से रुचिपूर्ण सीखना ही कक्षा होती है। यहाँ बच्चों के साथ शिक्षक भी कुछ सीखते मिलते हैं। शिक्षक भी बच्चों को ऐसे अनुभव देना चाहते हैं जो वह स्कूल में या कक्षा में नहीं दे पाते हैं। यह चाह ही शिक्षकों में ख़ुशी पैदा करती है। अभिभावकों से मिलने वाला प्रोत्साहन भी उनमें ख़ुशी पैदा करता है। इससे सकारात्मक ऊर्जा का प्रवाह होता है। बच्चों के लिए भी यहाँ कोई रोक-टोक नहीं होती। उनके पास कहानी पढ़ने से लेकर पेंटिंग करने या फिर खेलने तक सीखने के कई विकल्प होते हैं।

> **बच्चों को बाल साहित्य देना ही पर्याप्त नहीं है, शिक्षकों को भी बाल साहित्य पढ़ना ज़रूरी है।**

इन कैम्पों के अनुभव कहते हैं कि ऐसे कैम्प ज़रूर और बड़ी संख्या में होने चाहिए। पहला काम जो इनमें होता है, वह है शिक्षकों और बच्चों का एक दूसरे को जानने-समझने का एक अच्छा अवसर। बच्चों की घर-परिवार की परिस्थिति, उनकी रुचियों, अच्छी-बुरी आदतों के कारणों को समझना, उनसे दोस्ताना सम्बन्ध बनाना। अकसर स्कूल में हमारे पास ऐसे मौक़े कम होते हैं। चूँकि यहाँ अनौपचारिक माहौल होता है, बच्चे अपनी बातें कहने में काफ़ी सहज हो जाते हैं।

दूसरा, बच्चों के लिए सीखने के अधिक-से-अधिक अवसर हों। खेलों की गतिविधियाँ हों, आर्ट व पेंटिंग के लिए पर्याप्त सामग्री

चित्र 4 : अपने बनाए हुए मॉडल के बारे में बताते विद्यार्थी

हो। बच्चों के लिए पढ़ने की रोचक सामग्री हो। उनको कलाओं की अभिव्यक्ति के कई सारे मौक़े देने चाहिए। मैंने यह भी पाया कि बच्चों की नाटक और कठपुतली में बहुत रुचि होती है। कैम्प के मूल में है कि बच्चों को गतिविधियों में भाग लेने और सीखने की आज़ादी रहे। शिक्षक अकसर यह करते हुए मिलते हैं।

तीसरा, समर कैम्प में बच्चों में पढ़ने की रुचि पैदा करने का एक अच्छा अवसर होता है। ऐसे समय, जब बच्चे अपनी नई कक्षाओं में प्रवेश कर चुके होते हैं, यह दौर उनके लिए नई कक्षा, नई पाठ्यपुस्तकों से रू-ब-रू होने का होता है। कोविड के बाद प्राथमिक व उच्च प्राथमिक कक्षाओं के अधिकांश बच्चे अभी भी बुनियादी साक्षरता व संख्या ज्ञान से जूझ रहे हैं। इसलिए इस तरह के समर कैम्प में बच्चों में पढ़ने-पढ़ाने की रुचि पैदा करने के लिए उनके साथ कहानियों की किताबों पर रोचक चर्चा से उन्हें स्वतंत्र लेखन और अभिव्यक्ति के अवसर मिलना चाहिए। बच्चों को अपनी स्वाभाविक गति व स्थिति से एक क़दम आगे ले जाने के प्रयास होने चाहिए। बच्चों में सीखने का उत्साह बनाना, उन्हें प्रोत्साहन देना, हमारे प्रयासों के मूल में होना चाहिए।

चौथी महत्त्वपूर्ण बात यह कि समर कैम्प में, पहले की कक्षाओं, कक्षा परिवर्तन व बच्चों की स्थिति जानने के लिए किन चीज़ों पर ध्यान हो, इस पर ग़ौर करना हमेशा उपयोगी साबित होता है।

कुल मिलाकर, बात यही है कि यह जो अप्रैल, मई और जून का समय है, इसका जितना ज़्यादा उपयोग हम आनन्ददायक और रचनात्मक तरीक़े से बच्चों के सीखने-सिखाने में कर पाएँगे उनका अगली कक्षाओं के पाठ्यक्रम से क़दम-से-क़दम मिलाकर चलना उतना ही आसान होगा। यह समय बच्चों के लिए बिना किसी तनाव के मन लगाकर सीखने का है, और शिक्षकों के लिए अपनी शिक्षण प्रक्रियाओं को तय करते समय क्या ध्यान रखना है, कौन-से तरीक़े कारगर होते हैं, इसकी समझ विकसित करने का है।

शोभन सिंह नेगी 33 वर्षों से शिक्षा और समाज की बेहतरी से जुड़े कार्यों में संलग्न हैं। आप साल 2010 से अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन में कार्यरत हैं। आपने इस संगठन में 8 साल बाड़मेर, राजस्थान में कार्य किया है। वर्तमान में, उत्तराखण्ड राज्य में अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन के कार्यों को नेतृत्व प्रदान कर रहे हैं।

सम्पर्क : shobhan@azimpremjifoundation.org